P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वेदों में विश्व बंधुत्व का संदेश

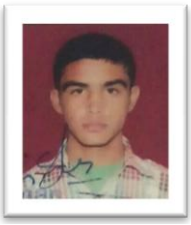

राहुल
शोधार्थी,
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,
रोहतक

सारांश

संसार में एकता स्थापित करने से ही मानव समाज की मूल समस्या– अशांति व असंतोष से छुटकारा मिल सकता है, परंतु इस दिशा में किए गये अब तक के प्रयास विफल सिद्ध हुए हैं। संसार में केवल एक ही देश है जिसने विश्व बंधुत्व की दिशा में बाहुबल के स्थान पर आत्मबल का प्रयोग किया है, सैन्यबल के स्थान पर धर्मबल का प्रयोग किया है। वह देश है– भारतवर्ष। भारत वह देश है जिसने अपने सैनिक अन्य देशों में आक्रांता के रूप में भेजने की बजाए विश्व की आत्मा को जीतने के लिए अपने धर्मगुरु भेजे। वैदिक विचारधारा के अनुसार किसी भी समाज या देश का सबसे पहला कर्त्तव्य है कि जनता को आर्य बनाना। आर्य का अर्थ है– शुद्ध चरित्र युक्त व्यक्ति। आज हमारे पास सब कुछ है दृ धन, संपत्ति, मोटर–गाडी, मकान आदि परंतु आज हमारे पास चरित्र का अभाव है। अगर आज के समाज को वैदिक भाषा में परिभाषित किया जाए तो आज हम सब अनार्य हैं। इसका मूल कारण यह है कि भारत में सदा से ही जिस वैदिक संस्कृति का पालन किया जाता रहा है, आज उसका सर्वथा अभाव है। वेदों में विश्व बंधुत्व का संदेश अनेक जगहों पर मिलता है।

मुख्य शब्द : विश्वबंधुत्व, वेद, शांति, एकता, आर्य, वैदिक संस्कृति, युद्ध, यूनेस्को विश्व महाशक्तियां, आतंकी संगठन आदि।

प्रस्तावना

संसार में वैदिक संस्कृति एकमात्र संस्कृति है जिसने मुक्त कंठ से यजुर्वेद के माध्यम से कहा है–

श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः ।। [1]

अर्थात् हे दुनिया के लोगों तुम सब अजर–अमर परमात्मा की संतान हो , भाई–भाई की तरह एक दूसरे से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो। ऋग्वेद में कहा है –

संगच्छध्वं संवदध्वं सं नो मनांसि जानताम्। [2]
देवाः भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

अर्थात् सम्पूर्ण मानव समाज कदम–से–कदम मिला कर चले। सब मिलकर विचार विमर्श करें, एक मन हो जाएं। विद्वानों का मत है कि मनुष्य से देवत्व प्राप्त करने का यही एक रास्ता है। अथर्ववेद में कहा है–

समानी प्रपा सह वो अन्नभागः समाने यक्त्रे
सह वो युनज्मि सभ्यञ्चोग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः। [3]

अर्थात् तुम सबका खाना पीना साथ–साथ हो तुम सब इस प्रकार से रहो मानो भगवान ने तुम सबको एक साथ जोड़ दिया है। जिस प्रकार रथ के पहिये में अरे नाभि स्थान में जुड़े होते हैं ,उसी प्रकार तुम्हारे समाज की रचना हो। यजुर्वेद में कहा है–

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्ति। [4]
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।

अर्थात् जो सब प्राणियों को अपने समान तथा अपने को सब प्राणियों के समान देखता है, उसका मन शांत हो जाता है उसे कोई संशय जीवन में डांवाडोल नहीं कर सकता। अथर्ववेद में बड़ा सुंदर वर्णन मिलता है–

अयुतो अहम् अयुतो मे आत्मा अयुतं मे चक्षुः अयुतं श्रोत्रम्। [5]
अयुतो मे प्राणः अयुतो व्यानः अयुतो अहम् सर्वः। ।

अर्थात् मैं एक नही अनेक हूँ, लाखों करोड़ों व्यक्तियों में मैं स्वयं को देखता हूँ, ये विश्व की लाखों करोड़ों आँखे, कान, जीवन मानो मेरा ही जीवन है। मैं मानव समाज हूँ, मानव समाज में मै हूँ। अथर्ववेद में एक अन्य जगह पर कहा है–

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।। [6]

अर्थात् मैं जिस दिशा में देखूं सबमें मुझे मित्रभाव ही दिखाई दे।

वैदिक संस्कृति में ऐसे मानव समाज की कल्पना की गई है, जिसमें भगवान का आदेश है कि समाज के हर व्यक्ति का हृदय समाज के हृदय के साथ, मन समाज के मन के साथ द्वेष–भाव को छोड़कर एक हो जाए। इतना ही नहीं यह बात भी स्पष्ट शब्दों में कही है कि भाई–भाई, भाई–बहन, मनुष्य–मनुष्य का जीवन ऐसा हो कि वो एक दूसरे के प्रेम में ऐसे बंधे हों जिस प्रकार गाय अपने बछड़े से प्यार करती है। अथर्ववेद में एक आदर्श मानव समाज का वर्णन करते हुए कहा है कि–

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।[7]
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुः अनस्फुरन्ति।।

अर्थात् जैसे एक घर में स्त्री पुरूष भिन्न–भिन्न विचारों को रखते हैं ,तथा एकजुट रहते हैं । इसी प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी के मानव समाज को भिन्न–भिन्न विचारो तथा भाषाओं के होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधे रहना चाहिए। अगर ऐसा होगा तो जिस प्रकार गाय अविचल खड़ी रहकर दूध देती हैं उसी प्रकार पृथ्वी माता धन–धान्य को सहस्रों रूपों में देकर समाज का कल्याण करती है।

अथर्ववेद में एक सुक्त आता है – सांमनस्य सूक्त
(अथर्ववेद 03.30)

सांमनस्य का अर्थ है – एक समान हो जाना, समाज में समता उत्पन्न कर देना । यह सारा सूक्त मानव मात्र में प्रेम–भाव का स्रोत बहाने के लिए लिखा गया है।

विश्व में शांति रखने के 6 सूत्र हैं–

1. सच्चाई से काम लेना
2. ईश्वरीय अखण्ड नियमों का पालन करना
3. समाज सेवा का व्रत लेना
4. विलासिता में न फंसकर तपस्यामय जीवन व्यतीत करना
5. विश्व को नियंत्रित करने वाली दैवीय शक्ति में विश्वास करना
6. दूसरों की भलाई में अपने स्वार्थ का उत्सर्ग करना

इसका अर्थ ये हुआ कि झूठ, बेईमानी, ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन, जन सेवा रहित विलासी जीवन, दैवीय शक्ति में अविश्वास और स्वार्थ ये सब समाज में अशांति व उपद्रव के मुख्य कारक हैं।

युनेस्को के विधान में लिखा है कि– युद्धों का श्रीगणेश मनुष्यों के मन में होता है , इसलिए शांति की नींव भी मानव मन में गाड कर रख देने से संसार की शांति हो सकती है। ये बात बिल्कुल सही है । युनेस्को के विधान निर्माताओं ने बिमारी को ठीक पहचाना है । इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि युद्धों का सूत्रपात मानव मन से होता है , निदान की पहचान तो हो गई मगर उसका उपचार कहाँ हुआ। राष्ट्र संघ की बैठक में जो सैंकडों देशों के प्रतिनिधि आकर बैठते हैं, वो देखने को तो एक– दूसरे के निकट बैठे होते हैं, परंतु उनके मन एक– दूसरे से इतने ही दूर होते हैं जितने उनके देश दूर हैं ।

जो लोग वैदिक सभ्यता को जानते हैं उन्हे मालूम होगा कि प्रतिदिन यज्ञ में उन मंत्रों का पाठ किया जाता है जिनमें शांति शब्द कम–से–कम 25 बार दोहराया गया है। एक मंत्र तो ऐसा है जिसकी टेक ही शांति है। इसमे मानव समाज की ही शांति की कामना नहीं की गई अपितु, जड जंगम, वनस्पति, आदि सब जगह शांति की कामना की गई है। वह मंत्र है –

ओं द्यौ शांतिः अन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शांतिः आपः शांतिः औषधयः शांतिः । वनस्पतयः शांतिः विश्वेदेवाः शांतिः ब्रह्म शांतिः सर्वं शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि । ओम् शांतिः शांतिः शांतिः ।[8]

मानव समाज के लिए अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी में शांति हो, जलों में शांति हो, वनों औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ मानव को शांति प्रदान करें, हर प्राणी के अंग प्रत्यंग में शांति हो, परमात्मा हमें ऐसे मार्ग पर चलाए जहाँ सब जगह शांति ही शांति बरसे ।

अध्ययन का उद्देश्य

वैदिक संस्कृति संसार की सर्व प्राचीन संस्कृति है। इस संस्कृति के आधार ग्रंथ वेद हैं। वेदों में केवल यज्ञपरक मंत्र न होकर वेद ज्ञान–विज्ञान के भंडार हैं। आज जहां संसार में सब ओर अशांति का माहौल है, एक देश दूसरे देश को आंख दिखाता है तरह तरह की धमकियां देता है। इन सब संकीर्णताओं का समाधान हमें वेदों में दिखाई देता है। वेद सबको मिल जुलकर प्रेम पूर्वक व्यवहार करने की प्रेरणा देता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य वेदों में निहित विश्व बंधुत्व के तत्वों, आपसी भाईचारे की शिक्षाओं को दिखाना है, और साथ ही यह भी प्रदर्शित करना है कि वैदिक संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों में किस प्रकार की उच्च कोटि की शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। अगर आज भी संसार महर्षि दयानंद सरस्वती के उद्घोष श्वेदों की ओर लोटोश का अनुसरण करे तो संसार में शांति स्थापित की जा सकती है।

निष्कर्ष

आज समाज में उथल पुथल क्यों मची है? क्या कारण है कि हम शांति–शांति चिल्लाते हैं मगर हमारे हाथ अशांति लगती है? इसका कारण यही है कि हम सच्चाई की दुहाई तो देते हैं मगर झूठ हमारे रग–रग में बसा है। आज पूरा विश्व तीसरे विश्वयुद्ध के मुहाने पर खड़ा है। अगर उसको बचाना है तो वैदिक विचारों का प्रचार प्रसार अत्यावश्यक है। अगर यजुर्वेद के निम्न मंत्र पर विश्व महाशक्तियां ओर तमाम आतंकी संगठन विचार कर लें तो पूरे विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है–

यास्मिन सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूत् विजानतः।[9]
यत्र को मोहः कः शोकः एकत्वम् अनुपश्यत।।

अर्थात् जो व्यक्ति दूसरों में अपने को तथा अपने में दूसरों को देखता है जो समझता है कि जैसा मैं अनुभव करता हूँ वैसा दूसरे भी करते हैं। जब व्यक्ति या समाज केवल अपने दृष्टिकोण से न देखकर दुसरो के दृष्टिकोण से भी देख लेता है तब उसकी सब समस्याओं का समाधान हो जाता है , उसे किसी प्रकार की उलझन नहीं रहती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *यजुर्वेद– 11.05 दयानंद यजुर्वेद भाष्य भास्कर , भाग– 2 पृष्ठ संख्या– 06 आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट , दिल्ली से प्रकाशित ।*
2. *ऋग्वेद– 10.191.02 ऋग्वेद संहिता पृष्ठ संख्या– 850 संस्कृत अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित।*
3. *अथर्ववेद– 03.30.06 अथर्ववेद संहिता पृष्ठ संख्या– 63 विजयकुमार गोविंदराम हासानंद ,दिल्ली से प्रकाशित।*
4. *यजुर्वेद– 40.6 दयानंद यजुर्वेद भाष्य भास्कर भाग– 4 पृष्ठ संख्या– 371*
5. *अथर्ववेदरू– 19.51.05 अथर्ववेद संहिता पृष्ठ संख्या– 473*
6. *वही– 19.15.06 पृष्ठ संख्या– 449*
7. *वही– 12.1.45 पृष्ठ संख्या– 332*
8. *यजुर्वेदः दृ 36.17*
9. *यजुर्वेद– 40.7 दयानंद यजुर्वेद भाष्य भास्कर भाग– 4 पृष्ठ संख्या– 375*